ISSN 2319-5304

National Mission for Manuscripts

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

कृति रक्षण

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की पत्रिका

Kriti Rakshana

Quarterly Publication of the National Mission for Manuscripts

July-September, 2019

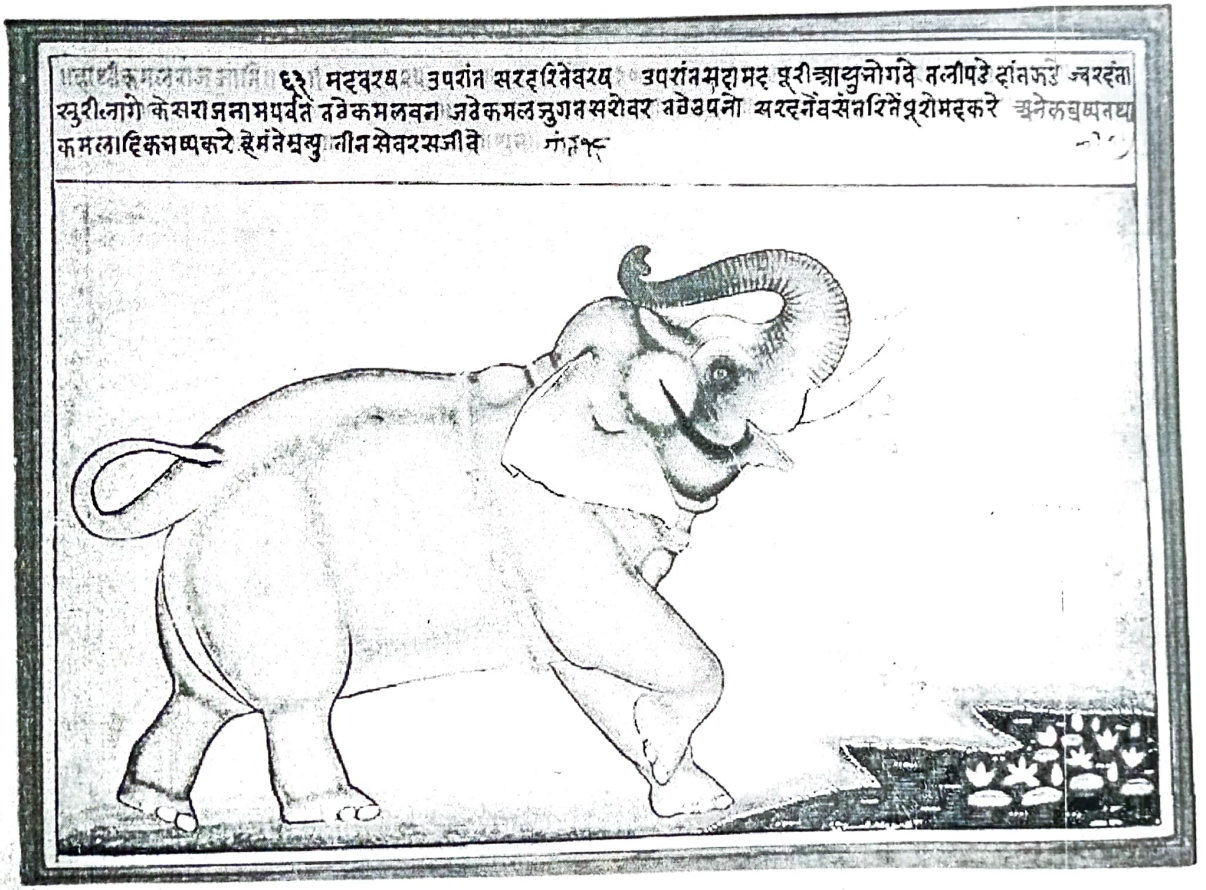

Contents

1 Unpublished Manuscripts on Commentaries of Meghadūtam — 4

Dr. Nibedita Pati

2 Manuscripts: As a symbol of Cultural Nationalism in India — 10

Dr. Sarwarul Haque

3 Transliteration of Manuscript: Saubhagya Ratnakara — 15

Sisir Kumar Padhy

4 सुलेख परम्परा: उद्भव एवं विकास — 16

डॉ० सत्यव्रत त्रिपाठी

5 Conservation — 19

6 Forthcoming Events — 23

7 A Note on Manuscriptology — 23

Shiva Prasad Tripathi

8 A step towards the reconstruction of the text of the Nāṭyaśāstra of Bharata — 24

Dr. Sugyan Kumar Mahanty

9 संस्कृत की कृषिशास्त्रीय पाण्डुलिपियाँ एवं विषयवस्तु — 29

प्रो. नीरज शर्मा

10 Publication — 33

11 National Mission for Manuscripts — 34

12 Book Review — 36

संस्कृत की कृषिशास्त्रीय पाण्डुलिपियाँ एवं विषयवस्तु

प्रो. नीरज शर्मा

प्राचीनकाल से ही भारत के आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन और गौरवपूर्ण इतिहास के संदर्भ में कृषि की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मानव सभ्यता के आदिकाल अथवा सभ्य जीवन का प्रारंभ पशुपालन एवं कृषि के साथ ही होता है। कृषि शब्दार्थ के विषय में अमरकोशकार कहते हैं- शस्योत्पादनार्थं भूमिकर्षणरूपे वैश्यवृत्तिभेदे अर्थात् शस्य उत्पादन के लिये भूमिकर्षण रूपा वैश्यवृत्ति 'कृषि' कहलाती है। कृषि शब्द 'कृष्' विलेखने धातु से निष्पन्न है जो 'भूमिकर्षण' अर्थ में प्रयुक्त है। वार्ताशास्त्र का सम्बन्ध कृषि, वाणिज्य, पशुपालन आदि मनुष्यों की आजीविका के साधन या वृत्तियों से था। कृषि का अर्थ केवल भूमि विलेखन या हल चलाना ही नहीं अपितु बीज, बैल आदि कृषि कर्म के संबंधित समस्त विवेचन के लिए कृषि शब्द का व्यवहार किया गया-

नाना क्रियाः कृषेरर्थाः नावश्यं कृषिविलेखनं एव वर्तते। किं तर्हि प्रतिविधानेऽपि वर्तते, यदसौ भक्तबीजबलिवर्दैः प्रतिविधानं करोति स कृष्यर्थः।[1]

संस्कृत साहित्य के सम्पूर्ण वाङ्मय पर यदि समग्र दृष्टि डाली जाए तो कृषिवैज्ञानिक चिन्तन के लिए मुख्यतः शास्त्रीयसाहित्य का अवलम्बन लेना होगा। संस्कृत के कृषि शास्त्रीय ग्रंथों की पाण्डुलिपि, उनमे उपलब्ध वैज्ञानिक विषयवस्तु का संक्षिप्त वर्णन निम्नानुसार किया जा सकता है-

स्वतन्त्र रूप से कृषि पर उपलब्ध अथवा संकेतित शास्त्रीय साहित्य -

महर्षिपराशरकृत कृषिपराशर :

महामुनि पाराशर विरचित कृषि पाराशर भारतीय कृषिशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ पाण्डुलिपि के रूप में कृषितन्त्र, कृषिपद्धति, कृषिसंग्रह आदि विविध नामों से उपलब्ध हुआ। "Krishi Paddhati of Parashar" के नाम से इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि केटेलाग सं 3168, 6475, इण्डिया आफिस लाइब्रेरी (ब्रिटिश लाईब्रेरी) तथा कैम्ब्रिज में उपलब्ध है. कीलहार्न एवं राजेन्द्रलाल मित्रा द्वारा संकेतित दो पाण्डुलिपियाँ तत्कालीन मध्यप्रांत- बंगाल में तथा एक पाण्डुलिपि प्रांतीय संग्रहालय कटक में थी जिनका उल्लेख न्यू केटेलाग्स केटेलागरम IV, 284 पर उपलब्ध है। इस ग्रन्थ की एक पांडुलिपि कांग्रेस लाईब्रेरी वाशिंगटन में है जो वेलीसिटी स्टेट कालेज नार्थ डकोटा के पूर्व प्रोफेसर युजिन हाल्टिंग द्वारा जमा कराई गई थी। वाशिंगटन की पाण्डुलिपि बंगाली अक्षरों में है तथा इसका नाम 'कृषिपद्धति' है। पूर्वोक्त पाण्डुलिपियों और संस्करणों का विस्तृत विवरण वोइतला महोदय के द्वारा दिया गया है।[2]

कृषिपराशर ग्रन्थ के ऐशियाटिक सोसायटी प्रकाशित संस्करण के अनुसार प्रयुक्त पांडुलिपियों का विवरण निम्नानुसार है-[3]

कृषिसंग्रह - बङ्गवासी संस्करण, कलकत्ता, 1322 B.S. (p.p.1-52) सं. ताराकान्त काव्यतीर्थ, बंगाली अनुवाद सहित

---

1 महाभाष्य 3.1.26
2 *History of Krsisastra, Gyula Wojtilla, harrassowits Verlag,Wiesbaden,2006 P31*
3 *Krsi Parasar, G P Majumdar,S C Banerji, Asiatic Society,2001,P V*

कृषिपद्धति – इण्डिया आफिस लाईब्रेरी पांडुलिपि सं 1274a (एच.टी. कोलब्रुक) केटेलाग सं 3168

इण्डिया आफिस लाइब्रेरी (ब्रिटिश लाईब्रेरी) में उपलब्ध अन्य प्रतिलिपि

C. कृषिपराशर की एक प्रतिलिपि वाडिया लाईब्रेरी, फर्ग्यूसन कॉलेज, पूना के मांडलिक सेक्शन में उपलब्ध है । संस्कृत पाठशाला कलकत्ता में मूल बांगला से यह प्रतिलिपि 04 फरवरी 1886 में की गयी। भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना में उपलब्ध इसकी प्रतिलिपि पर Post colophon statement इस प्रकार दर्ज है-

इदं पुस्तकं कलकत्ता संस्कृतपाठशालास्थबङ्गाक्षरपुस्तकाल्लिखितम् || पोषव (?) ३० शके १८०७ इसवी तारिख माहे फ़ेब्रुवारि सन १८८६ इसवी... समाप्त ।

ऐशियाटिक सोसायटी से जी.पी. मजूमदार व प्रो. एस.सी. बैनर्जी के सम्पादित अनूदित संस्करण प्रकाशित है। कृषिपाराशर के देश-विदेश में अनेक संपादन, अनुवाद तथा समीक्षा संस्करण प्रकाशित हुये है।

विषयवस्तु : परम्परागत रूप से महर्षि पराशर वशिष्ठ के पौत्र तथा गोत्रप्रवर्तक ऋषि हैं। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 65 से 73 तक सूक्त पराशर के नाम पर है। पराशर सकलशास्त्र पारंगत एवं पुराणों के वक्ता थे। उनके सत्यवती नामक धीवर कन्या से वेदव्यास पुत्र हुये। पराशर के नाम से अनेक ग्रन्थ प्रचलित हैं- बृहत्पाराशर होरा शास्त्र, लघुपाराशरी, पाराशर स्मृति, पाराशर संहिता, नीतिशास्त्र आदि। इसी प्रकार कृषिसंग्रह, कृषितन्त्र व पराशरतन्त्र नामक ग्रन्थ भी इन्हीं के नाम से हैं, परन्तु इनके प्रणेता पराशर तथा धर्मशास्त्रज्ञ पूर्ववर्ती पराशर की एकता के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कृषिपराशर ग्रन्थ की शैली के आधार पर यह 8वीं शदी से पूर्व का प्रतीत नहीं होता है। प्रो. जी.पी. मजूमदार कृषि पराशर का काल 950 से 1100 ईसवीय के मध्य निर्धारित करते हैं।[4] कृषि पराशर में 243 श्लोक हैं।

कृषि पाराशर ग्रन्थ अत्यन्त सरल, न्यूनसमास एवं सुबोध भाषा में लिखा गया है। कृषि पाराशर ग्रन्थ प्रजापति को नमस्कार कर प्रारम्भ होता है। कृषि पाराशर में कृषि एवं ज्योतिषीय मुहूर्तों अथवा काल-निर्धारण पर विशेष सामग्री मिलती है। यह ग्रन्थ भारतीय कृषि संस्कृति, कृषि सम्बन्धी प्रक्रियाओं, सावधानियों व परामर्शों को अपने कलेवर में समाहित करता है। भारत की परम्परागत खेती के स्वरूप में कृषि पाराशर की प्रविधियों के यत्र-तत्र आज भी दर्शन होते हैं। कृषि पराशर में वृष्टि विज्ञान पर विशेष विवेचन उपलब्ध है जो मौसम की ज्योतिषीय भविष्यवाणी के संदर्भ में उपादेय हो सकती है।

आचार्य कश्यप - कृषिसूक्ति

कृषिसूक्ति कृषिशास्त्र पर लिखा गया सबसे बडा स्वतन्त्र ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की एक देवनागरी पाण्डुलिपि उपलब्ध है जो अड्यार लाइब्रेरी चेन्नरइ में संरक्षित है

कृषिसूक्ति के प्रणेता परमवैष्णव विप्र हैं, जो कृषि में हिंसित प्रयोगों को निषिद्ध करते हैं।काश्यपीय कृषिसूक्ति का विभाजन वैज्ञानिक रीति से किया गया है। इसकी विषयवस्तु क्रमानुसार अनेक भागों में विभक्त है। आचार्य कश्यप के इस ग्रन्थ की उपलब्ध पाण्डुलिपि की सम्पूर्ण विषयवस्तु निम्नलिखित है –

प्रथम भाग- धान्यादिकृषिक्रमकथनम् :

द्वितीय भाग - शाकादिकृषिक्रमकथनम् : ।

तृतीय भाग – भोज्याभोज्यक्रमकथनम् :

चतुर्थ भाग- विविधहव्यनिवेदनक्रमकथनम्:

---

4 कृषि पराशर पृ18 .

महर्षिपराशर : वृक्षायुर्वेद

नितेंद्र नाथ सरकार के द्वारा पराशर के द्वारा लिखित वृक्ष आयुर्वेद का विवरण जरनल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल के वॉल्यूम XVI (1950) पी.123 में दिया गया है। प्रोफेसर लल्लनजी गोपाल के अनुसार पराशर वृक्षायुर्वेद ग्रंथ 12 वीं शताब्दी ईस्वी के उपरांत लिखा गया है ।

यह ग्रंथ 6 भागों में विभक्त है- बीजोप्तिकांड, वनस्पतिकांड, वानस्पत्यकांड, वीरूधवल्लीकांड, गुल्मशू-पकांड, चिकित्साकांड ।

पराशर वृक्षायुर्वेद में भारतीय वन प्रदेशों का भी वर्णन है जिसमें प्रयाग, त्रिपुरा, उत्कल, द्रविड, हिमालय आदि का वर्णन है ।

सुरपाल : वृक्षायुर्वेद

वृक्षायुर्वेद प्राचीन भारतीय वनस्पतिविज्ञान का अन्यतम ग्रन्थ है। वृक्षायुर्वेद प्राचीन भारतीय आयुर्वि-ज्ञान का महत्त्वपूर्ण प्रभाग था तथा सुरपाल अत्यन्त प्रसिद्ध वैद्य थे। ग्रन्थविवरण के आधार पर सुरपाल राजा भीमपाल के आश्रय में विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित थे, जिन्हें "वैद्य विद्यावरेण्य" कहा गया है।

ग्रन्थ के प्रथम और अन्तिम पृष्ठ प्रस्तुत है-

वृक्षायुर्वेद का तात्पर्य है- वनस्पति जीवन का विज्ञान। सामाजिकी वानिकी, उद्यान विज्ञान, जैवविविधता-सरंक्षण, पर्यावरण-सरंक्षण आदि के क्षेत्र में वृक्षायुर्वेद महान् उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें वनस्पति जगत की 170 प्रजातियों का वर्णन है। एशियन एग्रीहिस्ट्री फाउण्डेशन ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करवाया।

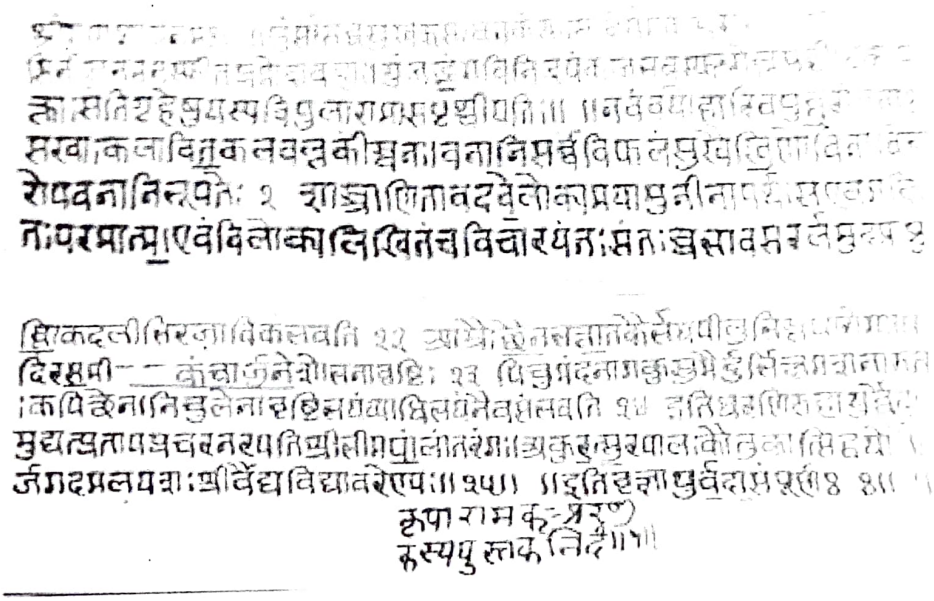

चक्रपाणि मिश्र - विश्ववल्लभ

चक्रपाणि मिश्र राजस्थान के सुप्रसिद्ध शौर्य-वीर्य के पर्याय मेवाड के महाराणा प्रताप के समकालीन और उनके आश्रित थे। चक्रपाणि मिश्र ने विश्ववल्लभ नामक कृषि विषयक ग्रन्थ का प्रणयन किया। इसमें कृषि कर्म से संबंधित कोई भी पक्ष अछूता नहीं रह गया। चक्रपाणिमिश्र स्वयं कवि, विद्वान, ज्योतिषी, कर्मकाण्डी, भूगर्भजल के ज्ञाता, वास्तुशास्त्री और निष्णात कृषिकर्म मर्मज्ञ थे।

विश्ववल्लभ की पाण्डुलिपि- राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में ग्रन्थांक 4909-23(vi)-5861 पर उपलब्ध है ।

1. इस पांडुलिपि का प्रथम और अन्तिम पृष्ठ प्रस्तुत है-

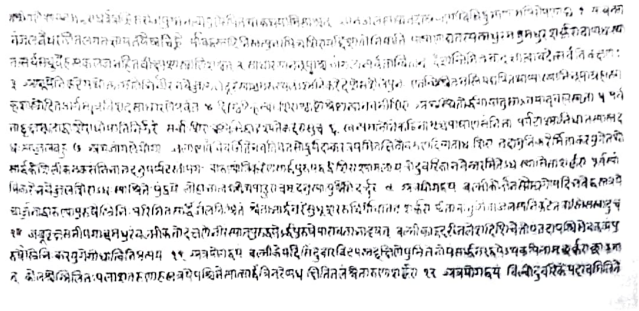

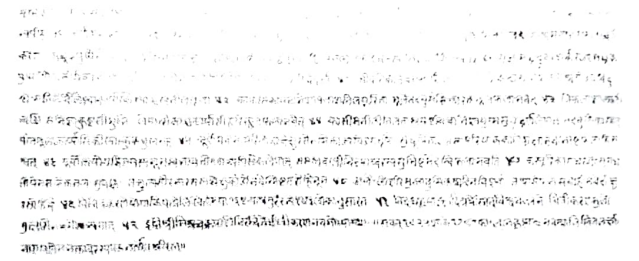

विश्ववल्लभ की अन्य पाण्डुलिपि श्रीवल्लभवैष्णवमठ, नाथद्वारा में उपलब्ध है। विश्ववल्लभ में विषयवस्तु कुल 9 अध्यायों में विभक्त है। विश्ववल्लभ की विषय सामग्री में आये पादपपोषण, रोगचिकित्सा आदि कतिपय विषय वृक्षायुर्वेद, उपवन विनोद, वृहत्संहिता एवं अग्निपुराण के अन्तर्गत आये वृक्षायुर्वेद से सम्बद्ध विषयों के समान है। राजस्थान की मरुभूमि एवं भौगोलिक विशेषताओं के अनुसार कृषि प्रविधियों पर विचार किया गया है।

कृषिसमयनिर्णय-

ग्रन्थ के लेखक अज्ञात है।

कृषिशासनम् -

कृषिशासनम् ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1920 में नागपुर के निकट सबनेर ग्राम के निवासी श्री दशरथ शास्त्री नामक विद्वान ने किया है।

कृषिविषय

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि नवद्वीप कृष्णनगर बंगाल के महाराजा श्रीयुक्तसतीशचन्द्र के पास थी। प्रो. गोइल वोयतिला ने लिखा है कि अज्ञात लेखक का यह ग्रन्थ शतश्लोकात्मक है जिसमें कृषिसम्बन्धी दिशा निर्देश दिये गये हैं। पराशर के कृषिसंग्रह (कलकत्ता 1915) में इसके कुछ श्लोक उद्धृत थे।[5]

केरलकृषि

इस ग्रन्थ की ताड़पत्रप्रतिलिपि मेकेन्जी संग्रह में है।

अध्यक्ष. संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

---

5 हिस्ट्री ऑफ कृषिशास्त्र, पृष्ठ *38*